प्रवेशांक
जुलाई - सितंबर, 2022

स्वनिम

(सृजन और शोध की संदर्भित एवं पूर्व-समीक्षित त्रैमासिक पत्रिका)

हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ. ग.)

ताज़ बेगम

छैल जो छबीला, सब रंग में रंगीला
बड़ा चित्त का अड़ीला,
कहूं देवतों से न्यारा है।

माल गले सोहै, नाक-मोती सेत जो है कान
कुण्डल मन मोहै,
लाल मुकुट सिर धारा है ।

दुष्टजन मारे, सब संत जो उबारे ताज़
चित्त में निहारे
प्रन प्रीति करन वारा है ।

नन्दजू का प्यारा, जिन कंस को पछारा
वह वृन्दावन वारा,
कृष्ण साहेब हमारा है ॥

सुनो दिल जानी, मेरे दिल की कहानी तुम
दस्त ही बिकानी,
बदनामी भी सहूंगी मैं ।

देवपूजा ठानी मैं, नमाज़ हूं भुलानी
तज़ कलमा-क़ुरआन
साड़े गुननि गहूंगी मैं ॥

श्यामला सलोना सिरताज सिरकुल्ले दिये
तेरे नेह दाग में निदाग ह्वै दहूँगी मैं ॥

नन्द के कुमार, कुरबान ताणी सूरत पै
हूं तो मुग़लानी,
हिन्दुआनी बन रहूंगी मैं ।

- मुगल सम्राट औरंगजेब की भतीजी ताज़ बेगम ।
मथुरा से 2 किलोमीटर की दूरी पर उनकी समाधि बनी है ।

स्वनिम

प्रवेशांक, जुलाई-सितंबर, 2022
सृजन और शोध की संदर्भित एवं पूर्व-समीक्षित त्रैमासिक पत्रिका
Refereed and Peer-Reviewed Magazine

© सर्वाधिकार सुरक्षित
वैधानिक चेतावनी - स्वनिम में प्रकाशित रचनाओं के साथ हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर या संपादकों की सहमति होना आवश्यक नहीं है। समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र बिलासपुर, छत्तीसगढ़ होगा। सभी रेखाचित्र इन्टरनेट से साभार लिए गए हैं।

संपादन : अवैतनिक
आवरण और साज-सज्जा : डॉ. अनीश कुमार

प्रकाशक व संपादकीय पता

डॉ. गौरी त्रिपाठी
सह-प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय)
कोनी, बिलासपुर (छ. ग.), पिनकोड - 495009
वेबसाइट - www.ggu.ac.in
ई-मेल - gauri.tripathi@ggu.ac.in
swanimhindiggv@gmail.com

संदेश

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल
कुलपति

मुझे में जानकर बेहद प्रसन्नता हो रही है कि गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा साहित्य और शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण त्रैमासिक पत्रिका 'स्वनिम' का सम्पादन और प्रकाशन शुरू किया जा रहा है। साहित्य की नाना विधाओं में नवोन्मेष की दृष्टि से छत्तीसगढ़ का हमेशा से ऐतिहासिक महत्त्व रहा है। छायावाद की पहली आलोचना मुकुटधर पांडेय ने यहीं से लिखी थी। यशस्वी लेखक माधवराव सप्रे ने पड़ोस के पेंड्रा कस्बा, जो कि अब जिला मुख्यालय हो चुका है, यहीं रहते हुए हिंदी की पहली कहानी 'टोकरी भर मिट्टी' लिखी थी। 'एक भारतीय आत्मा' कहे जाने वाले पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' जैसी कविता, जो कालांतर में स्वाधीनता संग्राम का राष्ट्रीय स्वर बन गयी, उसे बिलासपुर की केंद्रीय जेल में रहते हुए लिखा था। ऐसे में यहां के हिन्दी विभाग की रचनात्मक पहल स्वरूप 'स्वनिम' पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन गहरी आश्वस्ति देता है। हिन्दी विभाग की यह शुरुआत निश्चय ही शोध व साहित्य के खाली छूट गए पन्नों को भरने का कार्य करेगी।

हमें विश्वास है कि यह पत्रिका न केवल साहित्य तक सीमित रहेगी बल्कि मानविकी के दूसरे क्षेत्रों में जो कुछ महत्त्वपूर्ण रचा जा रहा है, उन सबका भी आईना बन कर निश्चित ही आने वाले समय में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक मुकम्मल पहचान बनाएगी।

वास्तव में साहित्य का विकास ही समाज का विकास है। साहित्य समाज और राजनीति को एक नया रास्ता दिखाता है। जैसा कि कभी प्रेमचंद ने कहा था कि साहित्य राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है। 'स्वनिम' के माध्यम से समाज व साहित्य के अप्रतिम योगदान में हम सभी सहभागी बनेंगे। हमें पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होगी।

इस महत्त्वपूर्ण प्रयास के लिए हिन्दी विभाग के समस्त सदस्यों व रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। **स्व**

संदेश

प्रो. शैलेंद्र कुमार
कुलसचिव (कार्यवाहक)

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर द्वारा हिन्दी साहित्य और समाज विज्ञान पर केन्द्रित शोध की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण त्रैमासिक पत्रिका **'स्वनिम'** का प्रवेशांक निकल रहा है। ज्ञातव्य है कि जुलाई माह में माननीय कुलपति महोदय प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल जी अपने कार्यकाल का एक वर्ष पूरा कर रहे हैं । उनके आगमन के बाद विश्वविद्यालय में कई नई गतिविधियों तथा नवीन नीतिगत मंचों की शुरुआत हुई। यह हम सभी के लिए गौरव का विषय है कि कुलपति जी द्वारा प्रथम वर्ष के कार्यकाल पूरा करने के अवसर पर **'स्वनिम'** के प्रवेशांक का लोकार्पण हो रहा है। माननीय कुलपति जी की दूरदर्शिता व साफ नीयत का ही यह परिणाम है जो आज इस रूप में भी क्रियान्वित हो रही है।

बिलासपुर की यह ऐतिहासिक धरती साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र रही है। यहाँ से 'स्वनिम' का प्रकाशन हमें आशान्वित करता है कि पुनः हिन्दी साहित्य का केंद्र बनकर उभरेगा।

वास्तव में पत्रिका का प्रकाशन दुरूह कार्यों में से एक है । फिर भी माननीय कुलपति जी के संरक्षण में और हिन्दी विभाग के सम्पादन मण्डल द्वारा शुरू हुआ यह कार्य अवश्य अपनी एक राष्ट्रीय पहचान स्थापित करेगा। हमें पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होगी। इस प्रयास में तत्पर हिन्दी विभाग के समस्त प्राध्यापकों व रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। **स्व**

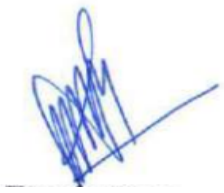

स्वनिम
प्रवेशांक, जुलाई-सितंबर, 2022
सृजन और शोध की संदर्भित एवं
पूर्व-समीक्षित त्रैमासिक पत्रिका

अनुक्रम

संपादकीय

अरपा तीरे – 6

विरासत

भोलाराम का जीव / **हरिशंकर परसाई** - 8

आलोचना

एक आदिम रात्रि की महक / **डॉ. गौरी त्रिपाठी** - 12

कहानी / लघुकथा

'क' से कबूतर / **जगदीश सौरभ** – 17

समय का फेर, उम्मीद का दीया / **मनीषा गिरि** - 16

एक और एक ग्यारह / **इन्दु बारौठ 'चारण'** - 24

जाँच / **सुनील कुमार 'सुमन'** - 65

समय, समाज और संस्कृति

साहित्य में पानी / **मुरली मनोहर सिंह**- 22

दर्दपुर के विस्थापन में औरतें / **संगीता** - 25

कविता / नवगीत / गज़ल

दिनेश सागर - 29 / **रमेश गोहे** - 31 / **हरिकेश गौतम** - 33 / **जगदीश पंकज** - 35

जिजीवियन

अनिष कुमार - 34 / **पायल चतुर्वेदी** - 34 / **ओम सुनील पंडा**- 37

शोध-आलेख

परिंदे : पाठ, दर-पाठ / **मोहन कुमार** - 39

लहर : युवा आक्रोश की सतहें / **डॉ. निकिता जैन** - 44

इतिहास में दर्ज होतीं दलित स्त्रियाँ / **रजनी प्रभा** - 54

मीरां का काव्य : मध्यकाल का स्त्री-स्वर / **संजय कुमार पटेल, डॉ. जया द्विवेदी** - 60

शिकंजे का दर्द : दलित साहित्य की बड़ी संभावना / **डॉ. अनिल कुमार** - 66

साक्षात्कार

पाठक के आब्जर्वेशन्स आपके लेखन को और समृद्ध करते हैं - ज्ञान चतुर्वेदी / **ललित श्रीमाली** - 73

समीक्षा

मास्टरबा : विडंबनाओं का यथार्थ / **मुक्तेश्वर मुकेश**- 83